हाँ बाबा, हाजीर बाबा, अभी बाबा...

"मीठे बच्चे - अपना स्वभाव बाप समान इज़ी बनाओ, तुम्हारे में कोई घमण्ड नहीं होना चाहिए, ज्ञानयुक्त बुद्धि हो, अभिमान न हो"

प्रश्नः-सर्विस करते हुए भी कई बच्चे बेबी से भी बेबी हैं - कैसे?

उत्तर:- कई बच्चे सर्विस करते रहते हैं, दूसरों को ज्ञान सुनाते रहते हैं लेकिन बाप को याद नहीं करते। कहते हैं बाबा याद भूल जाती है। तो बाबा उन्हें बेबी से भी बेबी कहता क्योंकि बच्चे कभी बाप को भूलते नहीं, तुम्हें जो बाप प्रिन्स-प्रिन्सेज़ बनाता, उसे तुम भूल क्यों जाते? अगर भूलेंगे तो वर्सा कैसे मिलेगा। तुम्हें हाथों से काम करते भी बाप को याद करना है।

ओम् शान्ति। पढ़ाई की एम ऑब्जेक्ट तो बच्चों के सामने है। बच्चे यह भी जानते हैं कि बाप साधारण तन में हैं, सो भी बूढ़ा तन है। वहाँ तो Heaven भल बूढ़े होते हैं तो भी खुशी रहती है कि हम बच्चा बनेंगे। तो

यह भी जानते हैं, इनको यह खुशी है कि हम यह बनने वाले हैं। बच्चे जैसी चलन हो जाती है। बच्चों मिसल इज़ी रहते हैं। घमण्ड आदि कुछ नहीं। ज्ञान की बुद्धि है। जैसे इनकी है वही तुम बच्चों की होनी चाहिए। बाबा हमको पढ़ाने आये हैं, हम यह बनेंगे। तो तुम बच्चों को यह खुशी अन्दर में होनी चाहिए ना - हम यह शरीर छोड़ जाकर यह बनेंगे। राजयोग सीख रहे हैं। छोटे बच्चे अथवा बड़े, सब शरीर छोड़ेंगे। सबके लिए पढ़ाई एक ही है। यह भी कहते हैं हम राजयोग सीखते हैं। फिर हम जाकर प्रिन्स बनेंगे। तुम भी कहते हो हम प्रिन्स-प्रिन्सेज़ बनेंगे। तुम पढ़ रहे हो प्रिन्स-प्रिन्सेज बनने के लिए। अन्त मती सो गति हो जायेगी। बुद्धि में यह निश्चय है हम बेगर से प्रिन्स बनने वाले हैं। यह बेगर दुनिया ही खत्म होनी है। बच्चों को बहुत खुशी रहनी चाहिए। बाबा बच्चों को भी आपसमान बनाते हैं। शिवबाबा कहते हैं हमको तो प्रिन्स-प्रिन्सेज़ बनना नहीं है। यह बाबा कहते हैं हमको तो बनना है ना। हम पढ़ रहे हैं, यह बनने के लिए। राजयोग है ना। बच्चे भी कहते हैं हम प्रिन्स-

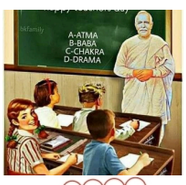

समझा?

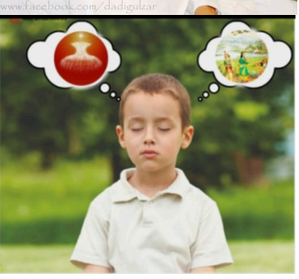

प्रिन्सेज बनेंगे। बाप कहते हैं बिल्कुल ठीक है। तुम्हारे मुख में गुलाब। यह इम्तहान है भी प्रिन्स-प्रिन्सेज बनने का। नॉलेज तो बड़ी सहज है। बाप को याद करना है और भविष्य वर्से को याद करना है। इस याद करने में ही मेहनत है। इस याद में रहेंगे तो फिर अन्त मती सो गति हो जायेगी। सन्यासी लोग मिसाल देते हैं, कोई कहते भैंस हूँ..... तो सचमुच समझने लगा। वह हैं सब फालतू बातें। यहाँ तो रिलीजन की बात है। तो बाप बच्चों को समझाते हैं ज्ञान तो बड़ा सहज है, परन्तु याद में मेहनत है। बाबा अक्सर कहते हैं - तुम तो बेबी हो। तो बच्चों के उल्हनें आते हैं, हम बेबी हैं? बाबा कहते - हाँ, बेबी हो। भल ज्ञान तो बहुत अच्छा है, प्रदर्शनी में सर्विस बहुत अच्छी करते हो, रात-दिन सर्विस में लग जाते हो फिर भी बेबी कह देता हूँ।

बाप कहते हैं यह (ब्रह्मा) भी बेबी है। यह बाबा कहते हैं तुम हमारे से भी बड़े हो, इनके ऊपर तो बहुत मामले हैं। जिनके माथे मामला..... सब ख्यालात रहती हैं। कितने समाचार बाबा के पास आते हैं इसलिए फिर सुबह को बैठ याद करने की

कोशिश करते हैं। वर्सा तो उनसे ही पाना है। तो बाप को याद करना है। सब बच्चों को रोज़ समझाता हूँ। मीठे बच्चों, तुम याद की यात्रा में बहुत कमजोर हो। ज्ञान में तो भल अच्छे हो परन्तु हर एक अपने दिल से पूछे - मैं बाबा की याद में कितना रहता हूँ? अच्छा, दिन में बहुत काम आदि में बिज़ी रहते हो, यूँ तो काम करते भी याद में रह सकते हो। कहावत भी है हथ कार डे दिल यार डे..... (हाथों से काम करते, बुद्धि वहाँ लगी रहे) जैसे भक्ति मार्ग में भल पूजा करते रहते हैं, बुद्धि और-और तरफ धन्धे आदि में चली जाती है अथवा कोई स्त्री का पति विलायत में होगा तो उनकी बुद्धि वहाँ चली जायेगी, जिससे जास्ती कनेक्शन है। तो भल सर्विस अच्छी करते हैं फिर भी बाबा बेबी बुद्धि कहते हैं। बहुत बच्चे लिखते हैं - हम बाबा की याद भूल जाते हैं। अरे, बाप को तो बेबी भी नहीं भूलते तुम तो बेबी से भी बेबी हो। जिस बाप से तुम प्रिन्स-प्रिन्सेज बनते हो, वह तुम्हारा बाप-टीचर-गुरू है, तुम उनको भूल जाते हो!

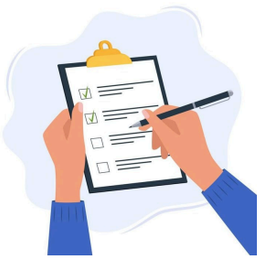

जो बच्चे अपना पूरा-पूरा पोतामेल बाप को भेज देते हैं बाबा उन्हें ही अपनी राय देते हैं। बच्चों को बताना चाहिए हम बाप को कैसे याद करते हैं? कब याद करते हैं? फिर बाप राय देंगे। बाबा समझ जायेंगे इनकी यह सर्विस है, इस अनुसार उनको कितनी फुर्सत रह सकती है? गवर्मेन्ट की नौकरी वालों को फुर्सत बहुत रहती है। काम थोड़ा हल्का हुआ, बाप को याद करते रहो। घूमते-फिरते भी बाप की याद रहे। बाबा टाइम भी देते हैं। अच्छा, रात को 9 बजे सो जाओ फिर 2-3 बजे उठकर याद करो। यहाँ आकर बैठ जाओ। परन्तु यह भी बैठने की आदत बाबा नहीं डालते हैं, याद तो चलते-फिरते भी कर सकते हो। यहाँ तो बच्चों को बहुत फुर्सत है। आगे तुम एकान्त में पहाड़ों पर जाकर बैठते थे। बाप को याद तो जरूर करना है। नहीं तो विकर्म विनाश कैसे होंगे। बाप को याद नहीं कर सकते हो तो जैसे बेबी से भी बेबी ठहरे ना। सारा मदार याद पर है। पतित-पावन बाप को याद करने की मेहनत है। नॉलेज तो बहुत सहज है। यह भी जानते हैं - यहाँ आकर समझेंगे भी वही

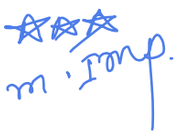

ये पक्का समझ लो...

जो कल्प पहले आये होंगे। बच्चों को डायरेक्शन मिलते रहते हैं। कोशिश यही करनी है हम तमोप्रधान से सतोप्रधान कैसे बने। सिवाए बाप की याद के और कोई उपाय नहीं। बाबा को बता सकते हो, बाबा हमारा यह धन्धा होने के कारण अथवा यह कार्य होने कारण हम याद नहीं कर सकता हूँ। बाबा फट से राय देंगे - ऐसे नहीं, ऐसे करो। तुम्हारा सारा मदार याद पर है। अच्छे-अच्छे बच्चे ज्ञान तो बहुत अच्छा देते हैं, किसको खुश कर देते हैं परन्तु योग है नहीं। बाप को याद करना है। यह समझते हुए भी फिर भूल जाते हैं, इसमें ही मेहनत है। आदत पड़ जायेगी तो फिर एरोप्लेन या ट्रेन में बैठे रहेंगे तो भी अपनी धुन लगी रहेगी। अन्दर में खुशी होगी हम बाबा से भविष्य प्रिन्स-प्रिन्सेज बन रहे हैं। सुबह को उठकर ऐसे बाप की याद में बैठ जाओ। फिर थक जाते हो। अच्छा, याद में लेट जाओ। बाप युक्तियाँ बतलाते हैं। चलते -फिरते याद नहीं कर सकते हो तो बाबा कहेंगे अच्छा रात को नेष्ठा में बैठो तो कुछ तुम्हारा जमा हो जाए। परन्तु यह जबरदस्ती एक जगह बैठना

One & Only way...

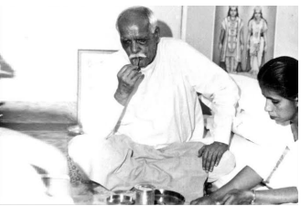

Self Talk

हठयोग हो जाता है। तुम्हारा तो है सहज मार्ग। रोटी खाते हो बाबा को याद करो। हम बाबा द्वारा विश्व का मालिक बन रहे हैं। अपने साथ बातें करते रहो, मैं इस पढ़ाई से यह बनता हूँ। पढ़ाई पर पूरा अटेन्शन देना है। तुम्हारी सब्जेक्ट ही थोड़ी है। बाबा कितना थोड़ा समझाते हैं, कोई भी बात न समझो तो बाबा से पूछो। अपने को आत्मा समझना है, यह शरीर तो 5 भूतों का है। मैं शरीर हूँ, ऐसा कहना गोया अपने को भूत समझना है। यह है ही आसुरी दुनिया, वह है दैवी दुनिया। यहाँ सब देह-अभिमानी हैं। अपनी आत्मा को कोई भी जानते नहीं। रांग और राइट तो होता है ना। हम आत्मा अविनाशी हैं - यह समझना है राइट। अपने को विनाशी शरीर समझना रांग हो जाता है। देह

का बड़ा अहंकार है। अब बाप कहते हैं - देह को भूलो, आत्म-अभिमानी बनो। इसमें है मेहनत। 84 जन्म लेते हो, अब घर चलना है। तुमको ही इज़ी लगता है, तुम्हारे ही 84 जन्म हैं। सूर्यवंशी देवता धर्म वालों के 84 जन्म हैं, करेक्ट कर लिखना होता है। बच्चे पढ़ते रहते हैं, करेक्शन होती रहती

है। उस पढ़ाई में भी नम्बरवार होते हैं ना। कम पढ़ेंगे तो पगार (पैसा) भी कम मिलेगा। अब तुम बच्चे बाबा पास आये हो सच्ची-सच्ची नर से नारायण बनने की अमरकथा सुनने। यह मृत्युलोक अब खत्म होना है। हमको अमरलोक जाना है। अभी तुम बच्चों को यह चिंता लग जानी चाहिए कि हमें तमोप्रधान से सतोप्रधान, पतित से पावन बनना है। पतित-पावन बाप सभी बच्चों को एक ही युक्ति बताते हैं - सिर्फ कहते हैं बाप को याद करो, चार्ट रखो तो तुमको बहुत खुशी होगी। अब तुमको ज्ञान है, दुनिया तो घोर अन्धियारे में है। तुमको अब रोशनी मिलती है। तुम त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी बन रहे हो। बहुत ऐसे भी मनुष्य हैं जो कहते हैं ज्ञान तो जहाँ-तहाँ मिलता रहता है, यह कोई नई बात नहीं है। अरे, यह ज्ञान कोई को मिलता ही नहीं। अगर वहाँ ज्ञान मिलता भी है फिर भी करते तो कुछ नहीं हो। नर से नारायण बनने का कोई पुरुषार्थ करते हैं? कुछ भी नहीं। तो बाप बच्चों को कहते हैं - सवेरे का टाइम बहुत अच्छा है। बड़ा मज़ा आता है, शान्त हो जाते हैं,

m.m.m. imp.

How great we all are...!

वायुमण्डल अच्छा रहता है। सबसे खराब वायुमण्डल रहता है - 10 से 12 तक इसलिए सवेरे का टाइम बहुत अच्छा है। रात को जल्दी सो जाओ फिर 2-3 बजे उठो। आराम से बैठो। बाबा से बातें करो। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी याद करो। शिवबाबा कहते हैं - मेरे में ज्ञान है ना, रचता और रचना का। मैं तुमको टीचर बनकर पढ़ाता हूँ। तुम आत्मा बाप को याद करते रहते हो। भारत का प्राचीन योग मशहूर है। योग किसके साथ? यह भी लिखना है। आत्मा का परमात्मा के साथ योग अर्थात् याद है। तुम बच्चे अभी जानते हो हम आल -राउन्डर हैं, पूरे 84 जन्म लेते हैं। यहाँ ब्राह्मण कुल के ही आयेंगे। हम ब्राह्मण हैं। अभी हम देवता बनने वाले हैं। सरस्वती भी बेटी है ना। बूढ़ा भी हूँ, बहुत खुशी होती है, अभी हम शरीर छोड़ फिर जाकर राजा के घर में जन्म लूँगा। मैं पढ़ रहा हूँ। फिर गोल्डन स्पून इन माउथ होगा। तुम सबकी यह एम ऑबजेक्ट है। खुशी क्यों नहीं होनी चाहिए। मनुष्य भल क्या भी बोलते रहें। तुम्हारी खुशी क्यों गुम हो जानी चाहिए। बाप को याद ही नहीं करेंगे

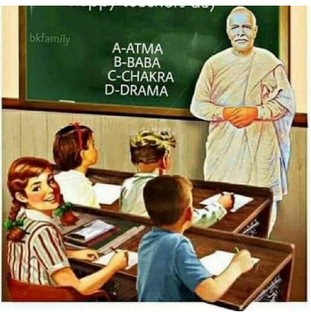

Experience of Sweet Brahma Baba

तो नर से नारायण कैसे बनेंगे। ऊंच बनना चाहिए ना। ऐसा पुरुषार्थ करके दिखाओ, मूंझते क्यों हो? दिलहोल क्यों होते हो कि सभी थोड़ेही राजायें बनेंगे! यह ख्याल आया, फेल हुआ। स्कूल में

बैरिस्टरी, इन्जीनियरी आदि पढ़ते हैं। ऐसे कहेंगे क्या कि सब बैरिस्टर थोड़ेही बनेंगे। नहीं पढ़ेंगे तो फेल हो जायेंगे। 16108 की सारी माला है। पहले-पहले कौन आयेंगे? जितना जो पुरुषार्थ करेंगे। एक-दो से तीखा पुरुषार्थ करते तो हैं ना। तुम बच्चों की बुद्धि में है - अभी हमें यह पुराना शरीर छोड़ घर जाना है। यह भी याद रहे तो पुरुषार्थ तीव्र हो जायेगा। तुम बच्चों की बुद्धि में रहना चाहिए कि सर्व का मुक्ति-जीवनमुक्ति दाता है ही एक बाप। आज दुनिया में इतने करोड़ों मनुष्य हैं। तुम

मेरे बाबा मुजे लेने आये है...

हो गई है शाम चलो लौट चले घर....

About/Approx → 9 लाख होंगे। सो भी एबाउट कहा जाता है। सतयुग में और कितने होंगे। राजाई में कुछ तो आदमी चाहिए ना। यह राजाई स्थापन हो रही है। बुद्धि कहती है सतयुग में बहुत छोटा झाड़ होता है, ब्युटीफुल। नाम ही है स्वर्ग पैराडाइज़। तुम बच्चों की बुद्धि में सारा चक्र फिरता रहता है। यह भी

सदैव फिरता रहे तो भी अच्छा।

यह खांसी आदि होती है यह कर्मभोग है, यह पुरानी जुत्ती है। नई तो यहाँ मिलनी नहीं है। मैं पुनर्जन्म तो लेता नहीं हूँ। न कोई गर्भ में जाता हूँ। मैं तो साधारण तन में प्रवेश करता हूँ। वानप्रस्थ अवस्था है, अभी वाणी से परे शान्तिधाम जाना है। जैसे रात से दिन, दिन से रात जरूर होनी है, वैसे पुरानी दुनिया जरूर विनाश होनी है। यह संगमयुग जरूर पूरा हो फिर सतयुग आयेगा। बच्चों को याद की यात्रा पर बहुत ध्यान देना है, जो अभी बहुत कम है, इसलिए बाबा बेबी कहते हैं। बेबीपना दिखाते हैं। कहते हैं बाबा को याद नहीं कर सकता हूँ, तो बेबी कहेंगे ना। complaint of supreme तुम छोटे बेबी हो, बाप को भूल जाते हो? मीठे ते मीठा बाप, टीचर, गुरू आधा कल्प का बिल्वेड मोस्ट, उनको भूल जाते हो! आधाकल्प दु:ख में तुम उनको याद करते आये हो, हे भगवान! आत्मा शरीर द्वारा कहती है ना। अब मैं आया हूँ, अच्छी रीति याद करो। बहुतों को रास्ता

Attention..!

याद करो...

We can see now

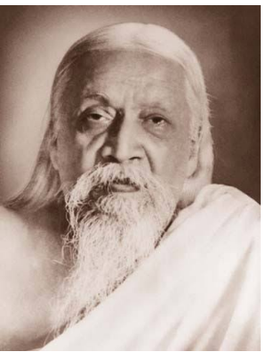

बताओ। आगे चलकर बहुत वृद्धि को पाते रहेंगे। धर्म की वृद्धि तो होती है ना। अरविन्द घोष का मिसाल। आज उनके कितने सेन्टर्स हैं। अभी तुम जानते हो वह सब है भक्ति मार्ग। अब तुमको ज्ञान मिलता है। पुरुषोत्तम बनने की यह नॉलेज है। तुम मनुष्य से देवता बनते हो। बाप आकर सब मूतपलीती कपड़ों को साफ करते हैं। उनकी ही महिमा है। मुख्य है याद। नॉलेज तो बहुत सहज है। मुरली पढ़कर सुनाओ। याद करते रहो। याद करते-करते आत्मा पवित्र हो जायेगी। पेट्रोल भरता जायेगा। फिर यह भागे। यह शिवबाबा की बरात कहो, बच्चे कहो। बाप कहते हैं मैं आया हूँ, काम चिता से उतार तुमको अब योग चिता पर बिठाता हूँ। योग से हेल्थ, ज्ञान से वेल्थ मिलती है। अच्छा।

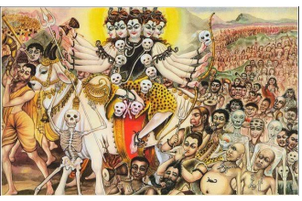

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) एम ऑब्जेक्ट को सामने रख खुशी में रहना है। कभी दिलहोल (दिलशिकस्त) नहीं बनना है - यह ख्याल कभी न आये कि सब थोड़ेही राजा बनेंगे। पुरुषार्थ कर ऊंच पद पाना है।

m.m.m. Imp.

2) मोस्ट बील्वेड बाप को बड़े प्यार से याद करना है, इसमें बेबी नहीं बनना है। याद के लिए सवेरे का टाइम अच्छा है। आराम से शान्ति में बैठ याद करो।

with too ... much love

Most important वरदान: 11/12/24
स्नेह में समाना ही सम्पूर्ण ज्ञान है।

'पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय,
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय'

यह दोहा संत कबीरदास जी का है. इस दोहे का अर्थ है कि बड़ी-बड़ी किताबें पढ़कर भी कोई महान पंडित नहीं बन जाता. कबीरदास जी का मानना है कि प्रेम या प्यार के केवल ढाई अक्षर ही अच्छी तरह पढ़ ले, तो वही सच्चा ज्ञानी होगा.

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

वरदान:- यज्ञ सेवा द्वारा सर्व प्राप्तियों का प्रसाद प्राप्त करने वाले आलराउन्ड सेवाधारी भव

Finale Achievement

संगमयुग पर आलराउन्ड सेवा का चांस मिलना - यह भी ड्रामा में एक लिफ्ट है,

M.Imp.

जो प्यार से यज्ञ की आलराउन्ड सेवा करते हैं उन्हें सर्व प्राप्तियों का प्रसाद स्वत:प्राप्त हो जाता है। वे निर्विघ्न रहते हैं।

एक बारी सेवा की और हजार बार सेवा का फल प्राप्त हो गया। सदा स्थूल सूक्ष्म लंगर लगा रहे।

किसी को भी सन्तुष्ट करना - यह सबसे बड़ी सेवा है। मेहमान निवाजी करना, यह सबसे बड़ा भाग्य है।

स्लोगन:- स्वमान में स्थित रहो तो अनेक प्रकार के अभिमान स्वत:समाप्त हो जायेंगे।

15-05-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

अव्यक्त इशारे - रूहानी रॉयल्टी और प्युरिटी की पर्सनैलिटी धारण करो

v/s

जैसे दुनिया की रॉयल आत्मायें कभी छोटी-छोटी बातों में, छोटी चीज़ों में अपनी बुद्धि वा समय नहीं देती, देखते भी नहीं देखती, सुनते भी नहीं सुनती,

ऐसे आप रूहानी रॉयल आत्मायें किसी भी आत्मा की छोटी-छोटी बातों में, जो रॉयल नहीं हैं उनमें अपनी बुद्धि वा समय नहीं दे सकते।

रूहानी रॉयल आत्माओं के मुख से कभी व्यर्थ वा साधारण बोल भी नहीं निकल सकते।

वरदान:- स्नेह की शक्ति से माया की शक्ति को समाप्त करने वाले सम्पूर्ण ज्ञानी भव

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय॥
अर्थात्:-
बड़ी बड़ी किताबें पढ़कर संसार में कितने ही लोग मृत्यु के द्वार पहुंच गए, पर कोई विद्वान न हो सका। कबीर मानते हैं कि यदि कोई प्रेम या प्यार के केवल ढाई अक्षर ही अच्छी तरह पढ़ ले। अर्थात प्यार का वास्तविक रूप पहचान ले तो वही सच्चा ज्ञानी होगा।
- कबीर

स्नेह में समाना ही सम्पूर्ण ज्ञान है। स्नेह ब्राह्मण जन्म का वरदान है।

Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue= धारणा, Green = सेवा

12

11-12-2024 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

संगमयुग पर स्नेह का सागर स्नेह के हीरे मोतियों की थालियां भरकर दे रहे हैं, तो स्नेह में सम्पन्न बनो।

स्नेह की शक्ति से परिस्थिति रूपी पहाड़ परिवर्तन हो पानी समान हल्का बन जायेगा। माया का कैसा भी विकराल रूप वा रॉयल रूप सामना करे तो सेकण्ड में स्नेह के सागर में समा जाओ। तो स्नेह की शक्ति से माया की शक्ति समाप्त हो जायेगी।

सेवा M.imp.

"फाइनल पेपर" book से "अव्यक्त बापदादा" के महावाक्य जो यहां रखते हैं, वो नये महावाक्य हर तीसरे दिन पर रखते है, जिसका उद्देश्य ये है की आज के जो महावाक्य यहां रखे गए हैं उसको कल और परसों रिवाइज कर सके। जिससे कि वह महावाक्य हमारे अंदर तक उतर जाए।

नहीं तो क्या होता है कि हर रोज नए महावाक्य आते हैं तो आगे के महावाक्य जैसे कि बुद्धि से erase से हो जाते है। इसलिए हम एक ही महावाक्य को तीन दिन तक revise करेंगे। जिससे कि वो महावाक्य हमारे अंतर मन मे उतर जाएंगे।

साथ ही इसी महावाक्य का video की लिंक भी रखेंगे जिससे कि चलते फिरते, काम करते, ऑफिस आते-जाते कभी भी सुन कर revise कर सकेंगे।

Revision is the key to Remember/inculcation...

आप भी महसूस करेंगे कि आज के वही महावाक्य , दूसरे - तीसरे दिन के revision पर उसका अति गूढ़ अर्थ (आपके यथा शक्ति पुरुषार्थ प्रमाण) आपके सामने प्रगट होगा।। इसी को मीठे प्यारे बापदादा ज्ञान का मनन-मंथन व ज्ञान की गहराई में जाना कहते है।

यहाँ पर रखे गए महावाक्यों का वीडियो, Revision के लिए ====> Click

22

आज भट्ठी की पढ़ाई का पेपर लिखत में दिया? फिर कल कौन-सा पेपर शुरू होगा, यह जानते हो? प्रैक्टिकल पेपर में कौन से क्वेश्चन आने वाले हैं, उन्हों को जानते हो? किस-किस प्रकार के क्वेश्चन्स आयेंगे? कल्प पहले क्या-क्या हम आत्माओं द्वारा हुआ है, वह स्मृति आती है? (हाँ) जब यह स्मृति आती है, तो क्वेश्चन कौन से आयेंगे-यह स्मृति नहीं आती हैं? माया सामना तो करेगी-लेकिन किस-किस रूपों में करेगी यह भी जानते हो कि नहीं? मास्टर नालेजफुल बनकर जा रहे हो ना। मास्टर नालेजफुल को तो इनएडवांस सभी मालूम पड़ ही जाता है।

Example

जैसे साइन्स वाले अपने यन्त्रों द्वारा जो भी कोई घटना जैसेकि तूफान वा बारिश का आना वा धरती का हिलना आदि पहले से ही जान लेते हैं तो क्या आप सभी भी मास्टर नालेजफुल बनने से इनएडवान्स अपनी बुद्धि-बल द्वारा नहीं जान सकते हो?

दिन-प्रतिदिन जितना-जितना अपनी स्मृति की समर्थी में आते जायेंगे अर्थात् अपनी आत्मा रूपी नेत्र को पावरफुल बनाते जायेंगे, क्लीयर बनाते जायेंगे उतना-उतना कोई भी अगर विघ्न आने वाला होगा तो पहले से ही यह महसूसता आयेगी की आज कोई पेपर होने वाला है। और जितना-जितना इनएडवान्स मालूम पड़ता जायेगा तो पहले से ही होशियार होने के कारण विघ्नों में सफलता पा लेंगे। जैसे

Example

आजकल के गवर्मेन्ट को जब पहले से ही मालूम पड़ जाता है कि दुश्मन आने

C.I.D/I.B./R.A.W. etc.

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

वाला है तो पहले से ही तैयारी करने के कारण विजयी बन सकते हैं और अचानक आक्रमण विजयी नहीं बना सकता। यहाँ एक तो त्रिकालदर्शी होने के नाते कल्प पहले की स्मृति ऐसे अनुभव करते हो जैसेकि कल की बात है और दूसरा फिर नालेजफुल होने के नाते से, तीसरा बुद्धि रूपी नेत्र पावरफुल और क्लीयर होने के कारण वह इनएडवान्स की बातों को कैच कर लेते हैं। तो तीनों ही प्रकार से अगर अटेन्शन है वा स्थिति है तो क्या आने वाले विघ्नों को पहले से ही परख नहीं सकते हो? और जैसे-जैसे इनएडवान्स में परख वा पहचान होती जायेगी तो कभी भी हार नहीं होगी, सदा विजयी होंगे। जैसे नेत्र ठीक न होने के कारण वा सी.आई.डी.की चेकिंग ठीक न होने के कारण कभी गवर्मेन्ट भी धोखा खा लेती है। इस रीति से सदैव अपनी बुद्धि रूपी नेत्र की सम्भाल होनी चाहिए कि यथार्थ रीति से कार्य कर रहा है?

समझा? पुछो अपने आप से... Homework

सी.आई.डी.का और क्या अर्थ है? चेकिंग ही सी.आई.डी. है। चेकिंग रूपी सी.आई.डी. होशियार है तो कभी भी दुश्मन से हार नहीं खा सकते। इसलिए अब भी प्रयत्न करो कि पहले से ही मालूम रहे। जैसे बारिस होने वाली होती है तो प्रकृति पहले से ही सावधानी जरूर देती है। अगर नालेजफुल हो तो प्रकृति के विघ्न से वह बच सकता है। अगर नालेजफुल नहीं तो प्रकृति के जो भिन्न-भिन्न छोटी-छोटी चीजें दु:ख की वा बीमारी की निमित्त बनती हैं उनके अधीन बन जाते हैं। कारण क्या होगा? पहचान वा नालेज की कमी। तो जैसे-जैसे याद की शक्ति अर्थात् साइलेन्स की शक्ति अपने में भरती जायेगी तो पहले से ही मालूम पड़ेगा कि आज कुछ होने वाला है। और दिन-प्रतिदिन जो अनन्य महारथी अटेन्शन और चेकिंग में रहते हैं, वह यह अनुभव करते जा रहे हैं। बुखार भी आने वाला होता है तो पहले से ही उसकी निशानियाँ दिखाई पड़ती हैं। तो इसमें भी अगर नालेजफुल हैं तो जो पेपर आने वाला है उसकी कोई निशानियाँ ज़रूर होती हैं लेकिन परखने की शक्ति पावरफुल हो तो कभी हार नहीं हो सकती। ज्योतिषि भी अपने ज्योतिष की नालेज से, ग्रहों की नालेज से आने वाली आपदाओं को जानते हैं। आपकी

Example समझा?

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Point for Intoxication

नालेज के आगे तो वह नालेज कुछ भी नहीं है। तुच्छ कहेंगे। तो जब तुच्छ नालेज वाले एडवान्स को जान सकते हैं अपनी नालेज की पावर से, तो क्या इतनी श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ नालेज से मास्टर नालेजफुल यह नहीं जान सकते? नहीं जान सकते तो इसका कारण यह है कि बुद्धि रूपी नेत्र क्लीयर नहीं हैं। और क्लीयर न होने का कारण क्या? केयरफुल नहीं। केयरफुल न होने के कारण नालेजफुल नहीं। नालेजफुल न होने कारण पावरफुल नहीं। पावरफुल न होने के कारण जो विजय की प्राप्ति होनी चाहिए वह नहीं होती। तो अपने नेत्र को क्लीयर रखना मुश्किल बात है क्या?

पुछो अपने आप से...

15/5/25

(27.07.1971)